



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 320]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 28, 2018/ आश्विन 6, 1940

No. 320]

NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 28, 2018/ASVINA 6, 1940

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 सितम्बर, 2018

अंतिम जांच परिणाम

मामला संख्या oi-47/2017

विषय: चीन पीआर, चीनी ताइपेई, हांगकांग और कोरिया के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सन/डस्ट कंट्रोल फिल्म के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच के अंतिम जाँच परिणाम।

फाइल सं. 6/44/2017-डीजीएडी : समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम भी कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षतिनिर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

1. यतः, मै. गरवारे पालिस्टर लिमिटेड (जिसे आगे 'आवेदक' भी कहा गया है) संबंधित अधिनियम और नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया है जिसमें चीन, चीनी ताइपेई, हांगकांग और कोरिया (जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सन/डस्ट कंट्रोल फिल्म (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों के संबंध में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन और घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति का आरोप लगाते हुए पाटनरोधी जाँच आरंभ करने और उन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया गया है।
2. और यतः प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर अधिसूचना सं 6/44/2017-डीजीएडी दिनांक 17 जनवरी, 2018 द्वारा जारी की जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित

किया गया जिसके द्वारा पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसार संबद्ध जांच शुरू की गई ताकि चीन, चीनी ताइपेई, हांगकांग और कोरिया के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई 'क्षति' को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

क. प्रक्रिया

3. संबद्ध जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है :
 - i. प्राधिकारी के संबंधित नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जाँच की शुरुआत करने से पहले वर्तमान पाटनरोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों और आर्थिक और सांस्कृतिक केन्द्रों को सूचित किया।
 - ii. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में अधिसूचना सं 6/44/2017-डीजीएडी दिनांक 17 जनवरी, 2018 जारी की।
 - iii. नियमावली के नियम 6(2) के अनुरूप जांच की शुरुआत के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों और आर्थिक और सांस्कृतिक केन्द्र को सूचित किया गया था और उनसे विहित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए संबद्ध देशों से निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह देने का अनुरोध किया।
 - iv. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्यातक की प्रश्नावली भेजी:-

क्रसं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. बोलेक्स सुपरओसंस इंटरनेशनल लिमिटेड, चीन
2	मै. झेजियांग शिचुआंग ऑप्टिक्स फिल्म मेनुफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड, चीन
3	मै. गुआंगडोंग नई दृष्टि फिल्म कं, लिमिटेड, चीन
4	मै. क्रिस्टल हु सेल्स, चीन
5	मै. सेलेडान टेक्नॉलाजी कंपनी, ताइवान
6	मै. एवरग्रिन कोटिंग टेक्नालाजी कं. लि., ताइवान
7	मै. एन. टैक विंडो फिल्म कं. लि., कोरिया
8	मै. कांगो लिमिटेड, दक्षिण कोरिया
9	मै. सीएनसी टैक, लि. दक्षिण कोरिया
10	मै. सीएनके कार्पोरेशन, दक्षिण कोरिया
11	मै. हांग ताइ (फार इस्ट) ट्रेडिंग लि., हांगकांग
12	मै. ग्लोबल मैटेरियल्स लिमिटेड, हांगकांग

- v. उक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में किसी भी आयातक/प्रयोक्ता ने उत्तर नहीं दिया और न ही प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया।
- vi. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाते हुए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावली भेजी थी।

क्र.सं.	आयातकों/उपभोक्तों का नाम
1	मै. ग्रास इम्पैक्स प्रा. लि., मुम्बई
2	मै. बालुपंकट, मुम्बई
3	मै. फिल्म शाप्पे, सूरत
4	मै. सभरवाल ब्रदर्स, दिल्ली
5	मै. एमकोर इंटरनेशनल, दिल्ली
6	मै. सनमिल्ड कार्प., दिल्ली
7	मै. राज्वी एंटरप्राइजेज
8	मै. राज एजेंसीज (चेन्नई)
9	मै. श्रीनिवास कार शाप्पे,
10	मै. साई आटो कार्पोरेशन
11	मै. अंबाजी टैक एंटरप्राइजेज प्रा. लि.

- vii. तथापि, किसी भी आयातक/प्रयोक्ता ने प्राधिकारी द्वारा जारी प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।
- viii. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए के अनुरोधों को सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराया गया और इन अंतिम जाँच परिणामों में उन पर समुचित ध्यान भी दिया गया है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया था।
- ix. आवेदक से अतिरिक्त सूचना मंगाई गई थी और घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त आंकड़ों का सत्यापन किया गया। घरेलू उद्योग को उचित लागत और कीमत आदि ज्ञात करने के प्रयोजनार्थ अतिरिक्त सूचना प्रदान करने के लिए कहा गया था।
- x. गोपनीय आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे के पर्याप्त होने के संबंध में की गई। गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकार को निर्देश दिया गया है कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध कराएँ और उन्हें नियमावली के अनुसार प्राधिकारी द्वारा सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा गया।
- xi. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध III के अनुसार क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) की गणना की गई
- xii. जाँच अप्रैल 2016 से शुरू होकर जून 2017 (15 महीने) की अवधि के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में, प्रवृत्तियों की जांच में 2013-2014, 2014-2015, 2015-2016 की अवधि और जाँच अवधि (पीओआई) शामिल है।
- xiii. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से जाँच अवधि समेत विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के सौदा-वार व्योरे की जानकारी देने का अनुरोध किया था। प्राधिकारी ने वर्तमान जांच में डीसीआईएंडएस से प्राप्त आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है।
- xiv. प्राधिकारी ने नियम 6(6) के अनुसार मौखिक रूप से संबंधित सूचना प्रस्तुत करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को एक अवसर प्रदान करने के लिए 7 जून, 2018 को एक मौखिक सुनवाई की जिसमें घरेलू उद्योग और टाईपेई आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया था। हक्सर की सरकार को भी इस सुनवाई के बारे में सूचना दी गई थी परंतु वे उपस्थित नहीं हुए। सुनवाई के पश्चात, घरेलू उद्योग और टाईपेई आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र द्वारा ही लिखित अनुरोध प्रस्तुत किए गए थे।
- xv. हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोधों पर अंतिम जांच परिणामों में संगत रूप से विचार किया गया है।

- xvi. एक प्रकटन विवरण जिसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन अनिवार्य तथ्य दिए गए थे, को 19.09.2018 को हितबद्ध पक्षों को जारी किया गया था, और उसमें प्रकटन विवरण के संबंध में टिप्पणियां यदि कोई हों, प्रस्तुत करने के लिए 26.9.2018 तक का समय दिया गया था। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए प्रकटन के बाद के अनुरोधों पर उचित ढंग से विचार किया है।
- xvii. इस अंतिम जॉच परिणाम में *** चिह्न हितबद्ध पक्षों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और नियमावली के अधीन प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को दर्शाता है।
- xviii. संबद्ध जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनायी गई विनियम दर 1 अमरीकी डॉलर = 67.45 रुपये के रूप में लिया गया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

4. वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद में सन और/या डस्ट कंट्रोल फिल्म शामिल है, यह एक प्रकार की विशेष पालीथिलीन/पालिएस्टर फिल्म है। सन और/या डस्ट कंट्रोल फिल्म एक प्रकार की सेल्फ एग्सेसिव प्लेट, शीट, फिल्म, फोइल, टेप, स्ट्रिप और प्लास्टिक के अन्य फ्लैट शेप होते हैं चाहे रोल्स में हों अथवा नहीं। विचाराधीन उत्पाद को व्यापार और बाजार शब्दावली में विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे सन फिल्म, सन और/या डस्ट कंट्रोल फिल्म, विंडो फिल्म, सोलर फिल्म, सोलर कंट्रोल फिल्म, सोलर विंडो फिल्म आदि। विचाराधीन उत्पाद के दायरे में प्लेन या मेटलाइज्ड पालीथिलीन/पालिएस्टर फिल्म शामिल नहीं है। वर्तमान जांच के दायरे में विचाराधीन उत्पाद के सभी संभव नाम और वर्णन शामिल हैं।
5. विचाराधीन उत्पाद का प्रयोग सूर्य की किरणों से होने वाले ताप और रेडिएशन को कम करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग सजावटी, सुरक्षात्मक, प्रतिबिंबित, सुरक्षा और संरक्षा आदि जैसे कई अन्य उद्देश्यों के लिए किया जाता है।
6. संबद्ध वस्तु को सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 39 के अधीन उप-शीर्षक 392069 (3920 6921/ 3920 6922/ 3920 6929) के तहत वर्गीकृत किया गया है। हालांकि, विचाराधीन उत्पाद एचएस कोड 3919, 3921 के तहत भी आयात किया जा रहा है। यह स्पष्ट किया जाता है कि एचएस कोड केवल सांकेतिक हैं जांच और निर्धारण के उद्देश्य के लिए केवल उत्पाद विवरण निर्धारण कारक है।
7. घरेलू उद्योग ने दावा किया कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद संबद्ध देशों से आयातित सामानों के समान वस्तु है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद और संबद्ध देशों से आयातित उत्पाद भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन और वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण के मामले में तुलनीय हैं। उन्होंने आगे कहा है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित वस्तु नियमों के अनुसार समान वस्तु है। दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं।
8. चूंकि हितबद्ध पक्षों में से किसी ने भी घरेलू और आयातित उत्पाद में अंतर के संबंध में कोई तर्क नहीं दिया है। प्राधिकारी ने सौदावार आयात आकड़ों की जांच की और नोट किया कि हालांकि आयात का विवरण सन डस्ट फिल्म है, आयात की कीमतें काफी अलग हैं। अंतर इतना व्यापक है कि यह घरेलू वस्तुओं के साथ आयातित वस्तु की तुलना को अवास्तविक बनाता है।

ग. घरेलू उद्योग का दायर और स्थिति

9. यह आवेदन मै. गरवारे पालिएस्टर लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है। आवेदक भारत में संबद्ध वस्तु के एकमात्र उत्पादक है आवेदक का पीओआई के दौरान भारतीय उत्पादन में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में 100 प्रतिशत हिस्सा बनता है। आवेदक ने प्रमाणित किया है कि वह संबद्ध देशों में विचाराधीन उत्पाद के किसी उत्पादक/निर्यातक से या भारत में किसी आयातक से संबंधित नहीं है। प्राधिकारी निर्धारित करते हैं

कि आवदेक कंपनी पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर पात्र घरेलू उद्योग हैं और आवेदन पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 (3) के अधीन योग्यता संबंधी मापदंडों को पूरा करता है।

घ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

10. अधिनियम की धारा 9 क(1)(ग) और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 में सामान्य मूल्य से संबंधित उपबंध दिए गए हैं।
11. चीन जन. गण., चीनी ताइपेई, हांगकांग और कोरिया गणराज्य के उत्पादकों/निर्यातकों में से किसी ने भी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है; इसलिए, प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के सिद्धांतों के आधार पर कार्रवाई की है।
12. संबद्ध देशों से किसी भी उत्पादक निर्यातक से असहयोग के संदर्भ में, प्राधिकारी अलग पाटन मार्जिन निर्धारित करने में सक्षम नहीं है और सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के सिद्धांतों के साथ कार्रवाई करने के लिए बाध्य है। नियमों के नियम 6 (8) के संदर्भ में उपलब्ध तथ्यों के अनुसार प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य निर्धारित किया। तदनुसार, परिकलित सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है जैसा कि नीचे पाटन मार्जिन तालिका में दिखाया गया है।
13. प्राधिकारी ने नोट किया कि निर्यातकों में से किसी ने प्राधिकारी को ढंग और तरीके से ऐसी जानकारी प्रस्तुत नहीं की है जिसका उपयोग निर्यात कीमत और अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए किया जा सके। इसलिए, प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस के सौदावार आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देशों में उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात मूल्य निर्धारित किया है। कारखाना-पूर्व के स्तर पर निवल निर्यात कीमत पर पहुंचने के लिए मालभाड़ा, समुद्री बीमा, बैंक शुल्क, पोर्ट व्यय के कारण निर्यात मूल्य समायोजित किया गया है। तदनुसार, संबद्ध देशों से निर्यात के लिए कारखाना-द्वार के स्तर पर निवल निर्यात कीमत नीचे दी गई पाटन मार्जिन तालिका में दर्शाया गया है।

संबद्ध देशों के पाटन मार्जिन

14. उपर्युक्त सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए, संबद्ध देशों की संबद्ध वस्तु के सभी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन नीचे निर्धारित किया गया है:

क्रसं.	विवरण	यूओएम	चीन	हांगकांग	कोरिया	ताइवान
1	आयात मात्रा	एमटी	138	142	183	93
2	परिकलित सामान्य मूल्य	रु./किग्रा.	***	***	***	***
3	निवल निर्यात कीमत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
4	पाटन मार्जिन	रु./किग्रा.	***	***	***	***
4क	पाटन मार्जिन	%	***	***	***	***
4ख	पाटन मार्जिन	रेंज	700-720	2070-2080	1560-1570	1635-1645

इ. क्षति निर्धारण की पद्धति और क्षति और कारणात्मक संबंधी की जांच

घरेलू उद्योग के विचार

15. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :
 - i. विचाराधीन उत्पाद की मांग क्षति की पूरी अवधि में बढ़ी है।
 - ii. क्षति अवधि में आयात की मात्रा में काफी वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से आयातों में न केवल आधार वर्ष के बाद बल्कि पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि में वृद्धि हुई है।

- iii. 2014-15 में कुल आयात में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा घट गया लेकिन 2015-16 में बढ़ोतरी हुई और जांच की अवधि में और वृद्धि हुई।
- iv. भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में संबद्ध देशों से आयात में वृद्धि हुई है।
- v. घरेलू उद्योग की बिक्री के संबंध में आयात काफी महत्वपूर्ण है और घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री का ये 1.5 गुणा हैं, इस तथ्य के बावजूद कि घरेलू उद्योग को अप्रयुक्त क्षमताओं का सामना करना पड़ रहा है और वह भारत में मांग की तुलना अधिक मात्रा में उत्पाद का उत्पादन कर रहा है।
- vi. क्षति अवधि में संबद्ध देशों से आयात कीमत में काफी कमी आई है। आधार वर्ष के बाद से आयात की अवधि में आयात की कीमत लगभग चौथाई हो गई है।
- vii. पाटित आयात घरेलू बाजार की कीमतों में भारी कमी कर रहे हैं और सभी संबद्ध देशों से कीमत कटौती काफी अधिक है।
- viii. आवेदक को पता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात की एक महत्वपूर्ण मात्रा ग्रेड या स्टॉक लॉट सामग्री से बाहर है। हालांकि, इस कारण से उत्पादन की लागत भिन्न नहीं हो सकती है। इस प्रकार, जहां तक पाटन मार्जिन का संबंध है, यह मुद्दा अप्रासंगिक है।
- ix. आयातक भारत में ऑफ ग्रेड सामग्री के प्रकार को आयात करते हैं और फिर घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की जाने वाली सामग्री के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। यहां तक कि यदि आयातक कुछ सामग्री को "अबिक्रीयोग्य" के रूप में खो देते हैं, तो घरेलू और आयातित उत्पाद के बीच कीमत अंतर काफी अधिक रहता है।
- x. संबद्ध देशों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और बिक्री कीमत से काफी कम है।
- xi. पूरी क्षति अवधि में बिक्री की कीमत में काफी कमी आई है। क्षति अवधि में कीमतों में लगभग ***% की कमी आई, जबकि लागत में केवल ***% की कमी आई।
- xii. यतः जांच अवधि में बिक्री की लागत में वृद्धि हुई है, तथापि जाँच अवधि में बिक्री कीमत में कमी आई है।
- xiii. पाटित कीमतें कम हैं और घरेलू उद्योग की कीमतों पर दबाव डाल रही हैं।
- xiv. क्षति अवधि में उत्पादन, बिक्री और क्षमता का उपयोग बढ़ गया है। इस अवधि के दौरान मांग में 82% की वृद्धि हुई है, जबकि घरेलू उद्योग अपनी क्षमताओं का पूरी तरह से उपयोग करने में सक्षम नहीं था।
- xv. यद्यपि, घरेलू उद्योग की बिक्री में क्षति अवधि में वृद्धि हुई है, तथापि (क) इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग कीमतों में ***% की भारी कमी आई थी, (ख) घरेलू उद्योग को काफी अधिक अप्रयुक्त क्षमताओं का सामना करना पड़ा। घरेलू उद्योग को अपने ग्राहकों और बाजार हिस्सेदारी को बनाए रखने के लिए कीमतों में भारी कमी करने के लिए मजबूर किया गया जिससे भारी वित्तीय हानि हुई।
- xvi. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 2014-15 में गिरावट आई, और उसके बाद जांच की अवधि तक उसमें वृद्धि हुई। अब भी घरेलू उद्योग अप्रयुक्त क्षमताओं का सामना कर रहा है।
- xvii. घरेलू उद्योग विकसित और विकासशील देशों में वैश्विक स्तर पर 30 से अधिक देशों को निर्यात कर रहा है, लेकिन अपने घरेलू बाजार में उसकी हिस्सेदारी कम है क्योंकि अधिकांश हिस्सा आयातों के पास है।
- xviii. प्रति इकाई लाभ, कुल लाभ, ब्याज से पहले लाभ और नकद लाभ सभी में क्षति अवधि में गिरावट आई है और जांच की अवधि में ये नकारात्मक हो गये हैं। क्षति अवधि में निवेश पर आय में कमी आई है और जांच की अवधि में यह नकारात्मक हो गई है। घरेलू उद्योग को पीओआई में नकद घाटे का सामना करना पड़ रहा है। लाभ, नकद लाभ और आरओआई के मामले में घरेलू उद्योग की वृद्धि बहुत नकारात्मक रही है।

- xix. आवेदक की निर्यात कीमत में ***% की वृद्धि हुई, देश में पाटन के कारण घरेलू बिक्री कीमत में ***% की कमी आई।
- xx. यद्यपि आवेदक के पास काफी निर्यात हैं और वह लाभदायक भी हैं, तथापि आवेदक को अपने घरेलू बाजार में महत्वपूर्ण वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़ रहा है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

संचयी आकलन

16. वर्तमान मामले में, प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है; प्रत्येक संबद्ध देशों से पाटित आयात की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है; और संबद्ध देशों के निर्यात सीधे भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान किए जाने वाले सामानों के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II(iii) के अनुसार, आयातित उत्पादों और आयातित उत्पादों और घरेलू समान उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के आलोक में पाटित आयात के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन उचित है। अतः, प्राधिकारी, संबद्ध देशों से पाटित आयात के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित समझते हैं।

क्षति संबंधी जांच

17. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षति के संबंध में हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों को नोट किया है और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों और लागू कानूनों पर विचार करके इसका विश्लेषण किया है। वास्तविक तथ्यों के अधीन प्राधिकारी द्वारा किया गया क्षति विश्लेषण वास्तव में इच्छुक पार्टियों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों पर ध्यान देता है।

I. मांग का आकलन

18. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ आवेदक की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से आयात की योग के रूप में भारत में संबंधित उत्पाद की मांग या स्पष्ट खपत को परिभाषित किया है। स्पष्ट खपत का पता लगाने के लिए आवेदक द्वारा किए गए निर्यात को गणना से बाहर रखा गया है। इस प्रकार आकलित मांग नीचे तालिका में दी गई है:

क्रसं	विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	घरेलू उद्योग की बिक्री	एमटी	***	***	***	***
2	अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	एमटी	-	-	-	-
3	संबद्ध देश	एमटी	236	301	425	445
4	अन्य	एमटी	29	52	48	30
5	कुल मांग	एमटी	422	522	715	768

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

19. यह देखा जाता है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में पूरी क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

II. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

I. आयात मात्रा और आयातों का बाजार हिस्सा

20. पाटित आयातों के मात्रा के संबंध में, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस से प्राप्त सौदा-वार आयात आकड़ों पर भरोसा किया है।

क्रसं	विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	संबद्ध देश	एमटी	235	301	425	445
1a	चीन	एमटी	88	44	53	110
1b	हांगकांग	एमटी	-	-	-	114
1c	कोरिया	एमटी	144	255	372	146
1d	ताइवान	एमटी	3	2	-	75
2	अन्य	एमटी	29	52	48	30
3	कुल आयात	एमटी	264	353	473	475
4	निम्न के संबंधमें संबद्ध देशों के आयात					
4क	भारतीय उत्पादन	%	14	17	24	25
4ख	मांग	%	56	58	59	58
4ग	कुल आयात	%	89	85	90	94

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

21. यह देखा जाता है कि :

- संपूर्ण रूप से संबद्ध देशों से आयातों में क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से वृद्धि हुई है।
- 2014-15 के दौरान चीन से आयात घट गया है और उसके बाद आधार वर्ष के साथ-साथ पिछले वर्षों की तुलना में पीओआई के दौरान वृद्धि हुई है।
- हांगकांग से आयात क्षति अवधि के दौरान शून्य था और उसके बाद पीओआई के दौरान आयात होना शुरू हो गया।
- पूरी क्षति अवधि के दौरान कोरिया से आयात में वृद्धि हुई है और उसके बाद पीओआई के दौरान आधार वर्ष के समान स्तर पर कमी आई है।
- पूरी क्षति अवधि के दौरान ताइवान से आयात नगण्य रहा था और इसके बाद पीओआई के दौरान उसमें वृद्धि हुई।
- उत्पादन के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों में पूरी क्षति अवधि और पीओआई में वृद्धि हुई है।
- मांग के संबंध में संबद्ध देशों से आयात पूरी क्षति अवधि और पीओआई में लगातार संगत बने रहे हैं।
- कुल आयात के संबंध में संबद्ध देशों से आयात पूरी क्षति अवधि और पीओआई में लगभग लगातार संगत बना रहा है।

III. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव

22. नियमावली के अनुबध्द II(iii) के अनुसार, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संबंध में घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करना अपेक्षित है।

I. कीमत कटौती

23. यह निर्धारित करने के लिए क्या आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के साथ आयातों की पंधुच कीमत की तुलना की है। इस संबंध में उत्पाद के पंधुच मूल्य और घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति की व्यापार के समान स्तर पर सभी छूटों और करों के निवल पर तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतें कारखाना-द्वार स्तर पर निर्धारित की गई हैं। घरेलू कीमत और कटौती का मार्जिन नीचे तालिका के अनुसार है :

क्रसं.	विवरण	इकाई	चीन	हांगकांग	कोरिया	ताइवान
1	आयातों की पंधुच कीमत	रु/किग्रा.	167	68	85	83
2	निवल बिक्री प्राप्ति	रु/किग्रा.	***	***	***	***
3	कीमत कटौती	रु/किग्रा.	***	***	***	***
3a	कीमत कटौती	%	***	***	***	***
3b	कीमत कटौती	रेंज	495-505	1360-1370	1070-1080	1095-1105

24. यह देखा जाता है कि प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की पंधुच कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम है जिसके परिणामस्वरूप भारी और सकारात्मक कीमत कटौती हो रही है।

ii. कम कीमत पर बिक्री

25. प्राधिकारी मानते हैं कि कम कीमत पर बिक्री क्षति के आकलन का एक प्रमुख संकेतक है। क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) निर्धारित की गई है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा जानने के लिए उसकी तुलना पंधुच मूल्य के साथ की गई है। क्षतिरहित कीमत को पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध III के अनुसार पीओआई के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए निर्धारित किया गया है।

क्रसं.	विवरण	यूओएम	चीन	हांगकांग	कोरिया	ताइवान
1	आयात मात्रा	एमटी	138	142	183	93
2	क्षतिरहित कीमत	रु/किग्रा.	***	***	***	***
3	पंधुच कीमत	रु/किग्रा.	***	***	***	***
4	कम कीमत पर बिक्री	रु/किग्रा.	***	***	***	***
4क	कम कीमत पर बिक्री	%	***	***	***	***
4ख	कम कीमत पर बिक्री	रेंज	625-635	1690-1700	1330-1340	1365-1375

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

26. यह देखा जाता है कि प्रत्येक संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की पंधुच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित एनआईपी से काफी कम है जिसके परिणामस्वरूप भारी और सकारात्मक कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव पड़ा है।

iii. कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

27. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों में ह्रास या न्यूनीकरण हो रहा है और क्या ऐसे आयातों कीमत में भारी कमी की गई है अथवा वह कीमत वृद्धि रुकी है जो अन्यथा काफी अधिक स्तर तक बढ़ गई होती, क्षति अवधि के दौरान लागत और कीमतों में परिवर्तनों पर निम्नानुसार विचार किया है :

क्रसं.	विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	आयातों की पंधुच कीमत	रु/किग्रा.	373	255	154	101
2	बिक्री लागत	रु/किग्रा.	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	89	97
3	बिक्री कीमत	रु/किग्रा.	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	69	63

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

28. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत क्षति अवधि और पीओआई में लगभग सुसंगत है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पूरी क्षति अवधि और पीओआई के दौरान घट गई है। बिक्री कीमत 2013-14 और 2014-15 के

दौरान बिक्री की लागत से ऊपर है लेकिन उसके बाद 2015-16 और पीओआई के दौरान बिक्री की लागत से कम हो गया। इसके अलावा, संबद्ध देशों से आयात के पहुंच मूल्य में पूरी क्षति अवधि और पीओआई के दौरान गिरावट आई है और वह घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से काफी कम है। इस प्रकार यह देखा जाता है कि पाटित आयात की कीमतें घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास और न्यूनीकरण कर रही हैं।

IV. घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

29. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। पाटनरोधी नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों पर निम्नानुसार चर्चा की गई है :-

i. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा

30. उत्पादन, घरेलू बिक्रियों, क्षमता और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्यनिष्पादन निम्नानुसार है :

क्रसं	विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	क्षमता (कुल)	एमटी	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100
2	उत्पादन	एमटी	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	103	103
3	क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	103	103
4	घरेलू बिक्री	एमटी	***	***	***	***
4क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	154	187
5	निर्यात बिक्री	निर्यात बिक्री	***	***	***	***
5 क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	97	122

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

31. प्राधिकारी ने लागत लेखा परीक्षा रिपोर्ट से घरेलू उद्योग की क्षमता पर विचार किया है। यह देखा जाता है कि क्षति अवधि और पीओआई में क्षमता स्थिर रही है। घरेलू उद्योग के साथ उत्पादन और क्षमता का उपयोग क्षति अवधि और 2014-15 के दौरान मामूली वृद्धि के साथ पीओआई में लगातार बना रहा है। पूरी बिक्री अवधि और पीओआई में घरेलू बिक्री में मामूली वृद्धि हुई है जबकि निर्यात बिक्री में काफी सुधार हुआ है। याचिकाकर्ता द्वारा यह कहा गया है कि उनके पास विचाराधीन उत्पाद की वर्तमान मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता है और आयात उस कारण से नहीं हुआ या बढ़ाया नहीं जा सकता था।

ii. मांग में बाजार हिस्सा

32. घरेलू उद्योग की मांग में बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभावों की निम्नानुसार जाँच की गई है :

क्र.सं.	मांग में बाजार हिस्सा	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	घरेलू उद्योग की बिक्री	%	***	***	***	***
2	संबद्ध देशों से आयात	%	56	58	59	58
3	अन्य	%	7	10	7	4
4	कुल मांग	%	100	100	100	100

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

33. यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री और कुल मांग में आयातों का हिस्सा पूरी क्षति अवधि और पीओआई के दौरान लगभग संगत बना रहा है। अन्य देशों से आयात का हिस्सा पूरी क्षति अवधि और पीओआई के दौरान मामूली रहा है।

iii. मालसूची

34. संबद्ध वस्तु की मालसूची से संबंधित आकड़े नीचे तालिका में दर्शाये गए हैं :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
औसत	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	132	163	155

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

35. ऐसा देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की मालसूची में पूरी क्षति अवधि और पीओआई में वृद्धि हुई है, यद्यपि संबद्ध वस्तु के लिए उद्योग द्वारा अनुमत औसत सूची स्टॉक के संबंध में जानकारी के अभाव में, वर्तमान संख्या वर्तमान जांच का वास्तविक संकेतक नहीं हो सकती है।

iv. लाभ/हानि, निवेश पर आय पीबीआईटी और नकद लाभ

36. घरेलू उद्योग का लाभ/हानि, नकद लाभ, ब्याज पूर्व लाभ और निवेश पर आय निम्नानुसार है :

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	लाभ/हानि	रु/किग्रा.	***	***	(***)	(***)
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	46	(3)	(61)
2	लाभ/हानि	लाख रु.	***	***	(***)	(***)
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	49	(5)	(113)
3	नकद लाभ	लाख रु.	***	***	***	(***)
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	51	4	(94)
4	ब्याज पूर्व लाभ	लाख रु.	***	***	***	(***)
4क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	50	0	(103)
5	नियोजित पूंजी पर आय-एनएफए	%	***	***	***	(***)
5क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	64	0	(116)

*पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

37. यह देखा जाता है कि प्रति इकाई लाभ, कुल लाभ, पीबीआईटी, नकद लाभ और नियोजित पूंजी पर आय में पूरी क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है और पीओआई में यह ऋणात्मक हो गये हैं।

v. रोजगार और मजदूरी

38. रोजगार और मजदूरी निम्नानुसार हैं :

क्र.सं	विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई*
1	कर्मचारियों की सं.	सं.	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119	123	114
2	मजदूरी	लाख रु.	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	150	161
3	प्रति इकाई मजदूरी	रु/मीटन	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119	147	156

* पीओआई के आकड़े वार्षिकीकृत हैं

39. ऐसा देखा जाता है कि पूरी क्षति अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई और उसके बाद पिछले वर्ष की तुलना में पीओआई के दौरान मामूली गिरावट आई। प्रति इकाई मजदूरी और मजदूरी में क्षति अवधि में और पीओआई में वृद्धि हुई जो अर्थव्यवस्था के लिए सामान्य प्रतिक्रिया हो सकती है।

vi. पाटन की मात्रा

40. यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों के आयात पाटन मार्जिन के न्यूनतम स्तर से बहुत अधिक हैं। संबद्ध देशों के लिए पाटन मार्जिन काफी महत्वपूर्ण है।

vii. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

41. याचिकाकर्ताओं ने यह कहा है कि उन्हें जांच की अवधि के दौरान महत्वपूर्ण वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ा है। यद्यपि याचिकाकर्ता एक बहु उत्पाद कंपनी है, तथापि दीर्घकालिक नुकसान पूंजी जुटाने की उसकी क्षमता को प्रभावित कर सकता है, हालांकि, इसके लिए कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं है।

viii. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

42. याचिकाकर्ताओं ने यह बताया है कि आयात उत्पादन लागत से और घरेलू उद्योग की एनआईपी से काफी कम कीमत पर हुए हैं, क्योंकि घरेलू उद्योग की एकमात्र प्रतिस्पर्धा आयात से है, इसलिए आयात कीमत ही गिरावट के लिए और घरेलू उद्योग को परिणामी वित्तीय और नकद घाटों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है।

ix. क्षति का समग्र मूल्यांकन

43. यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से आयात पूरी क्षति अवधि में समग्र रूप से बढ़ गया है। उत्पादन और खपत के संबंध में आयात का हिस्सा क्षति की संपूर्ण अवधि और पीओआई में लगातार बना रहा है। संबद्ध देशों से आयात की पहुंच कीमत में क्षति अवधि और पीओआई में गिरावट आई है। प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन सकारात्मक है। संबद्ध आयात सकारात्मक रूप से घरेलू कीमतों में कटौती और उन्हें कम कर रहे हैं और घरेलू कीमतों पर ह्रासकारी और न्यूनकारी प्रभाव डाल रहे हैं। घरेलू उद्योग का कार्यनिष्पादन लाभ, पीवीआईटी, नकद लाभ और आरओसीई के मामले में खराब हुआ है।

44. प्राधिकारी ने यह भी नोट किया कि आयातित वस्तुओं और घरेलू वस्तुओं की कीमतों में अंतर इस तथ्य को इंगित करता है कि ये संभवतः एक ही वस्तु नहीं हैं। यह उपरोक्त पैराग्राफों में यथा उल्लिखित घरेलू उद्योग द्वारा लिखित में वर्णित तथ्यों से और इस बातचीत कि आयात के दौरान "स्टॉक लॉट" नामक "ऑफ ग्रेड वस्तुओं" के आयात हुए हैं, के दौरान भी समर्थित हो जाता है। अतः, घरेलू उद्योग के प्रमुख वस्तुओं की कीमतों की तुलना आयातित होने वाले "ऑफ ग्रेड वस्तु" के साथ करना गलत है।

45. प्राधिकारी ने यह भी नोट किया कि विचाराधीन उत्पाद घरेलू बाजारों की तुलना में निर्यात बाजार में काफी अधिक कीमतें प्राप्त कर रहा है। इसके अलावा, जब घरेलू और निर्यात दोनों बिक्रियों को जोड़ा जाता है तो विचाराधीन उत्पाद लाभ में है।

V. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

46. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध III के अनुसार पीओआई के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए प्राधिकारी द्वारा यथा परिकलित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की क्षतिरहित कीमत की तुलना संबद्ध देशों से निर्यात के पहुंच मूल्य के साथ की गई है और इस प्रकार निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:

क्रसं.	विवरण	यूओएम	चीन	हांगकांग	कोरिया	ताइवान
1	आयात मात्रा	एमटी	138	142	183	93
2	क्षतिरहित कीमत	रु/किग्रा.	***	***	***	***
3	पहुंच कीमत	रु/किग्रा.	***	***	***	***
4	क्षति मार्जिन	रु/किग्रा.	***	***	***	***
5	क्षति मार्जिन	%	***	***	***	***
5क	क्षति मार्जिन	रेंज	625-635	1690-1700	1330-1340	1365-1375

छ. अन्य ज्ञात कारक एवं कारणात्मक संबंध

47. पाठन रोधी नियमावली एवं करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक कारकों, इसकी कम कीमत पर बिक्री और कीमत पर दबाव एवं न्यूनीकरण के प्रभावों के मामले में, घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की वास्तविक क्षति, मात्रा और कीमत के प्रभावों की मौजूदगी की जांच करने के बाद, प्राधिकारी ने यह देखने के लिए कार्यवाही की कि क्या पाटित आयातों के अलावा कोई अन्य कारक ने घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने में योगदान कर सकता था।

i तीसरे देश से आयात

48. संबद्ध देशों को छोड़कर अन्य देशों से आयात मात्रा की मामले में बहुत अधिक नहीं है जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचती हो अथवा क्षति होने का कोई खतरा हो। जांच की अवधि के दौरान कुल आयातों का लगभग 94 प्रतिशत संबद्ध देशों से होता है। संबद्ध देशों का हिस्सा क्षति की समग्र अवधि के दौरान लगभग एक जैसा रहा है।

ii मांग में संकुचन

49. संबद्ध वस्तुओं के लिए मांग में स्वतंत्र रूप में बढ़ती हुई प्रवृत्ति को दर्शाया है। तदनुसार मांग में गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकती है। क्षति समग्र अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का हिस्सा एक जैसा रहा है।

iii विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथायें और उनके बीच प्रतियोगिता

50. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऐसा कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग प्रभावित हो सकता था।

iv प्रौद्योगिकी का विकास

51. संबंधित उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस प्रकार से प्रौद्योगिकी के विकास का घरेलू उद्योग के विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

v खपत के पैटर्न में परिवर्तन

52. घरेलू उद्योग उस प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन कर रहा है जिसका आयात भारत में किया गया है। खपत के पैटर्न में संभावित परिवर्तन ऐसा कारक नहीं हो सकता है जिसके कारण घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव पड़ सकता था।

vi निर्यात निष्पादन

53. घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात समग्र अवधि के दौरान बहुत अधिक है और इसके कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। घरेलू बिक्री की पहचान और उसकी जांच वर्तमान विश्लेषण के लिए की गई है।

vii अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन

54. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए जा रहे और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों का कार्य निष्पादन का घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है क्योंकि केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में सूचना पर विचार विश्लेषण के लिए किया गया है।

viii घरेलू उद्योग की उत्पादकता

55. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का उत्पादन और उत्पादकता एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति के रूप में देखी गई है।

ज. प्रकटन पश्चात टिप्पणियां

56. प्रकटन पश्चात अनुरोधों का सारांश और उसका समाधान नीचे दिए गए अनुसार किया गया है:

घरेलू उद्योग का दृष्टिकोण

57. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:

- i. यह निर्णय करते समय कि क्या घरेलू उत्पाद विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु है, कीमत उन कारकों में से एक है और यह एक मात्र कारक नहीं है। उत्पाद के लक्षण, उत्पादन प्रौद्योगिकी, निर्माण प्रक्रिया, संयंत्र एवं उपकरण, उत्पादन में उपयोग किए गए कच्चे माल, कार्य एवं उपयोगिता, उत्पादक की और उपभोक्ता की समझ, वितरण का माध्यम, सीमा शुल्क वर्गीकरण और विचाराधीन उत्पाद के संबंध में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानदंड जैसे कारक में तथ्य है जिनका विचार प्राधिकारी द्वारा इस बात का निर्धारण करने के लिए विगत में किया गया है कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की गई वस्तु आयात की गई विचाराधीन उत्पाद का एक समान वस्तु है। घरेलू उद्योग ने उपर्युक्त सभी मानदंडों के संबंध में सूचना दी है और यह दावा किया है कि घरेलू उत्पाद विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु है।
- ii. विचाराधीन उत्पाद और घरेलू उद्योग के संबंध में आयात किए गए उत्पाद लेन देन को आयात किए गए विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु के रूप में उत्पादन किया गया है और बेचा गया है। दोनों उत्पाद वाणिज्यिक रूप से और तकनीकी रूप से एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किये जाने के योग्य हैं। विचाराधीन उत्पाद और गैर विचाराधीन उत्पाद को डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त सूचना के आधार पर अलग अलग किया जाता है और यह आंकड़े स्पष्ट रूप से उत्पाद के विवरण को दर्शाते हैं।
- iii. प्राधिकारी इस तथ्य के बारे में आश्वस्त नहीं हैं कि घरेलू वस्तु विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु है। प्रयुक्त भाषा संभवतः 'है जो यह स्पष्ट करती है कि प्राधिकारी को इस निष्कर्ष कि घरेलू वस्तु समान वस्तु है, पर पहुंचने के लिए और अधिक सूचना की आवश्यकता है।
- iv. प्राधिकारी ने इस तथ्य पर विचार नहीं किया है कि चीनी ताइपेई और संयुक्त अरब अमीरात से सन्/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म का आयात विगत में पाटन रोधी उपाय के अध्याधीन था और वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद का कार्य क्षेत्र वहीं है जो पिछली जांच में था।
- v. पी सी एन वार विश्लेषण वर्तमान जांच में इस तथ्य के कारण नहीं किया जा सकता है कि किसी भी निर्यातक ने उचित तुलना करने के लिए उत्तर नहीं दिया है और उत्पाद के प्रकारों की पहचान आयात की सूची के विवरण से नहीं की जा सकती है। घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से निर्यातकों अथवा आयातकों द्वारा सहयोग न किये जाने के कारण दंडित नहीं किया जाना चाहिए।
- vi. घरेलू उद्योग ने पहले ही विचाराधीन उत्पाद को 1, 2 और 3 प्लाई उत्पाद के रूप में अलग-अलग कर दिया है।
- vii. स्टॉक लॉटको विचाराधीन उत्पाद के कार्य क्षेत्र से अलग नहीं किया जा सकता है। यदि यह भी मान लिया जाता है कि घरेलू उद्योग स्टॉक लॉट का उत्पादन नहीं कर रहा था तब भी उसे विचाराधीन उत्पाद के कार्य क्षेत्र से बाहर नहीं किया जा सकता है। यह इस कारण से है कि विचाराधीन उत्पाद के कार्य क्षेत्र के भीतर किसी उत्पाद प्रकार को शामिल करता इस पर निर्भर नहीं करता है कि क्या घरेलू उद्योग बिल्कुल उसी प्रकार की, उसी गुणवत्ता की और उन्हीं लक्षणों वाले उत्पाद का निर्माण कर रहा है। इसके बजाय, घरेलू उद्योग से केवल यह अपेक्षित है कि वह विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु का उत्पादन करें जिसमें समान वस्तु की परिभाषा अधिनियम के नियम 2(घ) के अंतर्गत दी गई है। यदि प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर भी पहुंचते हैं कि घरेलू उद्योग स्टॉक लॉट का उत्पादन नहीं कर

- रहा है, दूसरा प्रश्न यह उठता है कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किये गए उत्पाद की विशेषताएं आयात किए गए उत्पाद की विशेषताओं से बिल्कुल मिलते जुलते हैं जिस पर विचार नहीं किया गया है।
- viii. प्राधिकारी की विगत प्रथा जिसे न्यायाधिकरण द्वारा भी सही ठहराया गया है, यह स्पष्ट करती है कि किसी उत्पाद को केवल इस आधार पर बाहर नहीं किया जा सकता है कि वह अपेक्षाकृत निम्न गुणवत्ता की है।
- ix. घरेलू उद्योग को पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमताओं का सामना करना पड़ा है और वह अपने ग्राहकों और बाजार हिस्से को बनाये रखने के लिए अपनी कीमतों में बहुत अधिक कमी करने के लिए बाध्य हुआ जिससे उसे भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ रही है। संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों में वृद्धि और घरेलू उद्योग को हो रही वास्तविक क्षति के बीच एक मजबूत संबंध है।
- x. इन तथ्यों पर पूर्वानुमान और मान्यताओं के आधार पर अनुचित रूप से विचार किया गया था। एक अपेक्षा /दायित्व को लागू करने की जटिलता है जो कानून के अंतर्गत मौजूद नहीं है और वास्तव में यह कानून की अपेक्षा का विरोधाभासी है जैसे:
- क. यह अंतर इतना व्यापक है कि यह घरेलू वस्तुओं के साथ आयात किए गए वस्तुओं की तुलना कस अयर्थाथवादी है।
- ख. संबद्ध वस्तुओं के लिए उद्योग द्वारा अनुमेय औसत माल भंडार के संबद्ध में सूचना के न होने को अनुरक्षित किया जाना है।
- xi. संचयी आकलन करने के लिए इसे उपयुक्त पाने के बावजूद, प्राधिकारी ने अलग अलग देश की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है।
- xii. घरेलू उद्योग ने न तो क्षति का दावा किया है और न ही याचिकाकर्ता के एक बहु-उत्पाद कंपनी होने की वजह से और पूंजी उगाहने के लिए इसकी क्षमता पर दीर्घ अवधि हानि का प्रभाव के संबंध में कोई साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए कहा गया था।
- xiii. जबकि घरेलू उद्योग निर्यात बाजार में अपेक्षाकृत अधिक कीमत पर सहमत होता है जो स्पष्ट रूप से भारत में पाटन और घरेलू उद्योग पर इसके परिणामी प्रभाव को दर्शाता है, घरेलू और निर्यात में कुल लाभ पर विचार करना एक ऐसा दृष्टिकोण है जो प्रत्यक्ष रूप से प्राधिकारी द्वारा सतत रूप से प्रयोग की गई दृष्टिकोण के प्रतिकूल है।
- xiv. पाटन रोधी शुल्क एक निर्धारित रूप में लगाया जा सकता है जिसे अमरीकी डॉलर / कि.ग्रा. के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

विरोधी हितबद्ध पक्षकारों का दृष्टिकोण

58. विभिन्न विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध नीचे दिए गए अनुसार हैं:
- i. भारत में वाणिज्य मंत्रालय द्वारा की जा रही डी जी सी आई एंड एस आंकड़े, निर्यात आयात आंकड़े बैंक तथा हाँगकांग सीमा शुल्क का कोई सह संबंध नहीं है। सी एंड एस डी आंकड़े एच एस 3920 69 29 में अलग अलग व्यौरा उपलब्ध नहीं कराता है और इस प्रकार से तुलना केवल 6 आंकड़े के स्तर अर्थात् एच एस 3920 69 पर ही किया जा सकता है जिसका अभिप्राय यह है कि एच एस 3920 69 के लिए सी एंड एस डी के आंकड़ों में वर्तमान पाटन रोधी जांच के कार्यक्षेत्र से आगे के उत्पाद शामिल है।
- ii. पाटन रोधी जांच घरेलू उद्योग द्वारा किये गए भ्रामक पाटन आरोपों के आधार पर और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का या तो पाटन अथवा क्षति का पर्याप्त साक्ष्य दिये बिना किया गया था।
- iii. आयात के आंकड़ों ने उन आयातों को शामिल किया है जो विचाराधीन उत्पाद नहीं हैं अथवा विचाराधीन उत्पाद हैं जिसमें बहुत अधिक ईकाई कीमतों वाले उत्पाद प्रकार हैं।
- iv. औसत ईकाई कीमतों में देखी गई गिरावट वास्तव में पाटन के फलस्वरूप घरेलू कीमतों में वास्तविक परिवर्तन के कारण नहीं बल्कि किसी विशेष वर्ष में बेची जा रही कम कीमत पर घरेलू उत्पादों के एक बड़े हुए हिस्से के कारण उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन का परिणाम हो सकता है।
- v. हक्सर का विभाग यह दर्शाता है कि हाँगकांग में क्षति की अवधि और जांच की अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तुओं का कोई निर्यात नहीं हुआ।
- vi. हाँगकांग से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई थी क्योंकि यह जांच की अवधि के दौरान भारत के कुल आयात का मात्र 2 प्रतिशत है। विचाराधीन उत्पाद का आयात जांच की अवधि के दौरान शुरु हुआ और इस प्रकार से जांच की

अवधि के पूर्व क्षति को दर्शाने वाले किसी कारक को हांगकांग से हुए आयात से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। हांगकांग की 2 कंपनियों का नाम गलत तरीके से याचिका में ज्ञात निर्यातकों के रूप में उल्लेख किया गया था क्योंकि एक ने विचाराधीन उत्पाद को नमूने के तौर पर और परीक्षण के लिए भेजा था और न कि वाणिज्यिक उद्देश्य से और दूसरी कंपनी ने भारत में किसी संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है।

- vii. याचिकाकर्ता ने एच एस कोड पर विचार किये बिना विचाराधीन उत्पाद के आयातों के रूप में 'सन फिल्म', 'विंडो फिल्म' और 'डस्ट कंट्रोल फिल्म' के मद के अंतर्गत आने वाले सभी आयातों को शामिल किया है, वाणिज्यिक उत्पाद के विवरणों के आधार पर इस प्रकार से पुनः वर्गीकरण से त्रुटि हो सकती है और इसके फलस्वरूप आयात के आंकड़ों को बढ़ा चढ़ा कर दिखाया जा सकता है।
- viii. संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद की कथित पाटन और घरेलू उद्योग को हो रही कथित क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। घरेलू उद्योग को हुई कथित क्षति उनकी अपनी अक्षमताओं के कारण स्पष्ट रूप से हुई है। घरेलू उद्योग के आर्थिक मानदंडों के संबंध में सूचना यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग के आर्थिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ है और इस कारण से यह सुरक्षित रूप से अनुमान लगाया जा सकता है कि घरेलू उद्योग को विचाराधीन उत्पाद के कथित पाटन के कारण कोई हानि नहीं हो रही है। नियोजित पूंजी पर नकारात्मक आय गलत है क्योंकि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से और उत्पादन के कोई गिरावट नहीं दर्शाई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

59. यह नोट किया जाता है कि प्रकटन पश्चात चरण में उठाये गए मुद्दों की जांच पहले ही प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त संगत अनुच्छेदों में किया जा चुका है।
- क. यह विश्लेषण संचयी रूप से और इसके अतिरिक्त अलग अलग तौर पर भी किया गया है।
- ख. यह एक नई जांच है और इस कारण से पूर्व के जांच में अपनाये गए विचाराधीन उत्पाद और जारी किए गए जांच परिणाम वर्तमान मूल जांच के लिए मार्ग दर्शी सिद्धांत नहीं हो सकते हैं क्योंकि विचाराधीन उत्पाद के मुद्दों की जांच की गई है और उसकी चर्चा यहां नए तरीके से की गई है।
- ग. विचाराधीन उत्पाद बहुत व्यापक है जिसमें विभिन्न उत्पाद प्रकार हैं और इस कारण से घरेलू उद्योग द्वारा निर्माण की गई समान वस्तुओं और आयात की जा रही वस्तुओं के बीच कोई उचित तुलना संभव नहीं है। यदि निर्यातकों से कोई उत्तर नहीं भी मिला था तब घरेलू उद्योग प्राधिकारी को संबद्ध वस्तुओं में अपने लंबे अनुभव को देखते हुए विचाराधीन उत्पाद को विभिन्न पी सी एम के अनुरूप बनाने में सहायता कर सकता था।
- घ. स्टॉक लॉट की अवधारणा और कम आयात कीमतों के लिए कारण का उल्लेख घरेलू उद्योग द्वारा स्वयं चर्चा के दौरान अपनी तकनीकी दल के माध्यम से किया गया था। जो समान रिजेक्ट्स अथवा सेंकेंड्स हैं वे प्राथमिक वस्तुओं की समान वस्तु नहीं हैं और इस लिए दोनों के बीच तुलना बिल्कुल अनुचित है।
- ड. प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों पर विश्वास किया है क्योंकि जांच के दौरान किसी निर्यातक का उत्तर नहीं था, अतः विशिष्ट आंकड़ों का क्रास सत्यापन नहीं किया जा सका।

इ निष्कर्ष

60. उठाये गए मुद्दों और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये अनुरोधों और उपलब्ध तथ्यों जिसे इस जांच परिणाम में रिकार्ड किया गया है, की जांच करने के बाद, प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि :
- i. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन की गई वस्तु समान वस्तु नहीं है।
- ii. घरेलू उद्योग के स्वास्थ्य में कुल मिलाकर सुधार है। घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो रही है।

ज सिफारिश

61. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह जांच शुरू की गई थी और सभी हितबद्ध पक्षकारों को इसकी सूचना दी गई थी और घरेलू उत्पादकों, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराने के लिए समुचित अवसर दिया गया था। पाटन रोधी नियमावली के संबंध में पाटन, क्षति और उसके कारणात्मक संबंध की वर्तमान जांच शुरू करने और आयोजित करने के बाद यह सिद्ध हुआ है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों के कारण क्षति नहीं हो रही है क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन की गई वस्तुओं और संबद्ध देशों से आयात की गई वस्तुओं में बहुत अधिक अंतर है। प्राधिकारी का यह मत है कि

पाटन रोधी शुल्क लगाना वर्तमान मामले में आवश्यक नहीं है। इसको देखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी चीन, चीनी ताइपेई, हांगकांग और कोरिया के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए सन/डस्ट कंट्रोल फिल्म के संबद्ध में पाटन रोधी शुल्क कि सिफारिश नहीं करना उपयुक्त मानते हैं।

62. इस जांच परिणाम से उत्पन्न केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध अपील सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 और मैसर्स जिंदल पॉली फिल्म लिमिटेड में दिल्ली के माननीय उच्च न्यायालय के फैसले नामित प्राधिकरण डब्ल्यूपी। (सिविल) संख्या 8202/2017 के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं महानिदेशक

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 28th September, 2018

FINAL FINDING

(Case No. OI-47/2017)

Subject : Final Finding in antidumping investigation concerning imports of Sun/dust control film originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Hong Kong and Korea.

F.No.6/44/2017-DGAD: - Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as The Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred as the AD Rules);

1. Whereas M/s. Garware Polyester Limited (hereinafter referred to as the “applicant” had filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) in accordance with the Act and Rule supra, for initiation of anti-dumping investigation and imposition of anti-dumping duty concerning imports of Sun/dust control film originating in or exported from China, Chinese Taipei, Hong Kong and Korea (hereinafter also referred to as the subject countries) alleging dumping of subject goods from subject countries and consequent injury to the Domestic Industry.
2. Whereas, the Authority, on the basis of sufficient prima facie evidence submitted by the applicant, issued a Notification No. 6/44/2017-DGAD dated 17th January, 2018 published in the Gazette of India, initiating the subject investigation in accordance with the Rule 5 of the AD Rules to determine existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from China, Chinese Taipei, Hong Kong and Korea, and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic industry.

A. PROCEDURE

3. The procedure described herein below has been followed with regard to the subject investigation:
 - i. The Authority notified the Embassy and economic and cultural centers of the subject countries in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.

- ii. The Authority issued a Notification No. 6/44/2017-DGAD dated 17th January, 2018 published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods from subject countries.
- iii. The Embassy and economic and cultural center of subject countries in India was informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2) of the Rules with a request to advise the exporters/producers from subject countries to respond to the questionnaire within prescribed time limit. the Government of the Hong Kong Special Administrative Region (HAKSAR) was also informed about the initiation, who then filed submissions through the trade and Industry department.
- iv. The Authority sent exporter's questionnaires to elicit relevant information to the following known producers/exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the Rules:

SN	Name of Producer/ Exporter
1	M/s Bolex Superoceans International Limited, China
2	M/s Zhejiang Shichuang Optics Film Manufacturing Co. Limited, China
3	M/s Guangdong New Vision Film Co., Limited, China
4	M/s Crystal Hu Sales, China
5	M/s Celadon Technology Company, Taiwan
6	M/s Ever Green Coating Technology Co. Ltd, Taiwan
7	M/s N. Tech window film co., ltd. Korea
8	M/s Conco limited, South Korea
9	M/s CNC Tech. Ltd, South Korea
10	M/s CNK Corporation, South Korea
11	M/s Hang Tai (Far East) Trading Ltd, Hong Kong
12	M/s Global Materials Limited, Hong Kong

- v. In response to the above notification, none of the exporters/ producers have responded or submitted exporter questionnaire response.
- vi. The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/ users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules.

SN	Name of Importers/Consumers
1	M/s. Grass Impex Pvt. Ltd, Mumbai
2	M/s Balupunkt, Mumbai
3	M/s. Film Shoppe, Surat
4	M/s. Sabharwal Brothers, Delhi
5	M/s. Amcor International, Delhi
6	M/s. Sunmild Corp., Delhi
7	M/s Rajvi Enterprises
8	M/s Raj Agencies [Chennai]
9	M/s Srinivas Car Shoppee
10	M/s Sai Auto Corporation
11	M/s Aambaji Tech Enterprise Pvt Ltd.

- vii. However, none of the importers/user responded to the questionnaire issued by the Authority.
- viii. The submissions made by interested parties have been made available in the public file and also addressed appropriately in this Final Finding. Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

- ix. Further information was sought from the applicant and verification of the data provided by the domestic industry was also conducted. The domestic Industry was asked to provide further information for the purpose of working out proper cost and price etc.
- x. Information provided by the domestic industry on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. The party was asked to furnish non-confidential version of the information filed on confidential basis and the same were kept in the public file maintained by the Authority as per the Rules.
- xi. The Non-Injurious Price (NIP) was computed in terms of Annexure III to the Anti-dumping Rules.
- xii. Investigation was carried out for the period starting April 2016 to June 2017 (15 months). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from 2013-14, 2014-15, and 2015-16 and the Period of Investigation (POI).
- xiii. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the POI. The authority has relied upon import data procured from DGCI&S in the present investigation.
- xiv. The Authority held an oral hearing on 7th June, 2018 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance with Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry and Taipei Economic and Cultural Centre. The Government of HAKSAR was also informed about the hearing but they did not attend it. Subsequent to the hearing, written submissions were filed by DI and Taipei Economic and Cultural Centre only.
- xv. The various submissions made by the interested parties including the Governments of Subject Country, considered relevant by the Authority have been addressed in this Final Finding.
- xvi. A Disclosure Statement was issued to interested parties on 19.9.2018 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 26.9.2018 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.
- xvii. *** in this Final Finding represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
- xviii. The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is 1 US \$ = Rs. 67.45.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

4. The product under consideration in the present case is sun and/or dust control film. Sun and/or dust control film is a kind of specialty polyethylene/polyester film. It is in the form of Self Adhesive plate, sheet, film, foil, tape, strip and other flat shapes of plastics whether or not in rolls. The product under consideration is known by different names in the trade and market parlance, such as Sun films, Sun and/or dust control film, Window Film, Solar films, Solar Control Films, Solar Window Films etc. The scope of the product under consideration excludes plain or metallized polyethylene/polyester films. The scope of the present investigations included all possible names & descriptions of the product under consideration.
5. The product under consideration is used for the purpose of reducing heat and radiation caused by the sun's rays. It is used for various other purposes such as decorative, protective, reflective, safety & security etc.
6. The subject goods are classified under Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 3920 69 (3920 6921/ 3920 6922/ 3920 6929). However, the product under consideration is being also imported under the HS code 3919 and 3921. It is clarified that the HS codes are indicative only and product description is the determining factor for the purpose of present investigation and determination.
7. The domestic Industry claimed that the product under consideration produced by the domestic industry is like article to the goods imported from the subject countries. Product under consideration produced by the domestic industry and imported from the subject countries are comparable in terms of physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. They have further stated that goods produced by the domestic industry and imported from the subject countries are like articles in terms of the Rules. The two are technically and commercially substitutable.
8. As none of the interested parties have advanced any argument with regard to the differences in the domestic and imported product. The Authority examined the transaction wise import data and noted

that though the description of import is sun dust film, the import prices are significantly different. The difference is so wide that it makes comparison of imported goods with domestic goods unrealistic.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

9. The petition has been filed by M/s Garware Polyester Limited. The applicant is the sole producer of the subject goods in India and accounts for 100% production of the product under consideration in India. The applicant certified that they are not related to a producer/exporter of the product under consideration in subject countries or an importer in India. The Authority determines that the applicant company constitutes eligible domestic industry within the meaning of Rule 2 (b) of the Anti-Dumping Rules and the application satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 (3) of the anti-dumping Rules.

D. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN.

10. The Provisions pertaining to normal value are given in Section 9A(1)(c) of the Act and Annexure-I to AD Rules.
11. None of the producers/exporters from China PR, Chinese Taipei, Hong Kong and Korea RP have filed the response to questionnaire; therefore, the Authority has proceeded based on the principles of best available information.
12. In view of non-cooperation from any producer exporter from the subject countries, the Authority is not able to determine individual dumping margin and is constrained to proceed with the principles of best available information. The Authority determined normal value as per facts available in terms of Rule 6(8) of the Rules. Accordingly, Constructed Normal value has been determined is as shown in the dumping margin table below.
13. The Authority notes that none of the exporters have furnished information to the authority in the form and manner prescribed which could be used for determination of the export price and individual dumping margin. Therefore, the Authority has determined the export price for producers/exporters in subject countries on the basis of the DGCI&S transaction wise data. The export price has been adjusted on account of Freight, Marine Insurance, Bank Charges, Port Expenses to arrive at the net export price at ex-factory level. Accordingly, the net export price at ex-factory level for exports from subject countries is as shown in the dumping margin table below.

Dumping margin of the subject countries

14. Considering the normal value and export price as above, the dumping margin for all exporters of the subject goods from the subject countries is determined as below:

SN	Particular	UOM	China	Hong Kong	Korea	Taiwan
1	Import Volume	MT	138	142	183	93
2	Constrected Normal Value	Rs/KG	***	***	***	***
3	Net Export Price	Rs/KG	***	***	***	***
4	Dumping Margin	Rs/KG	***	***	***	***
4a	Dumping Margin	%	***	***	***	***
4b	Dumping Margin	Range	700-720	2070-2080	1560-1570	1635-1645

E. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

Submissions of Domestic Industry

15. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to injury and causal link:
- Demand for the product under consideration has increased throughout the injury period.
 - Volume of imports has significantly increased throughout the injury period. Imports from subject countries have increased in period of investigation not only since base year but also as compared to previous year.
 - Market share of subject countries in total imports declined in 2014- 15 but increased in 2015-16 and further increased in period of investigation.
 - The imports from subject countries have increased in relation to production and consumption in India.
 - The imports in relation to sales of the domestic industry are quite significant and constitutes 1.5 times of the sales by the domestic industry despite the fact that the domestic industry is holding unutilised capacities and is producing the product in volumes far more than demand in India.

- vi. The import price from the subject countries declined significantly throughout the injury period. Import prices have almost become one fourth in the period of investigation since the base year.
- vii. The dumped imports are drastically undercutting the prices of the domestic market and price undercutting from all the subject countries is significant.
- viii. Applicant is aware that a significant volume of the import of product under consideration is off grade or stock lot material. However, the cost of production cannot be different for this reason. Thus, the issue is irrelevant as far as dumping margin is concerned.
- ix. The importers import off grade material sort the same in India and then compete with the material offered by the domestic industry. Even if the importers loose some material as "unsaleable", the price difference between the domestic and imported product remains very significant.
- x. Landed price of the subject countries are significantly below the cost of sales and selling price of the domestic industry.
- xi. The selling price has declined significantly throughout the injury period. The prices declined over the injury period by about **%, even when costs declined only by **%.
- xii. Whereas the cost of sales has increased in the Period of investigation, the selling price declined in the Period of investigation.
- xiii. The dumped prices are depressing and suppressing the prices of the domestic industry.
- xiv. Production, sales and capacity utilization has increased over the injury period. Even when the demand has increased by **% over the period, the domestic industry was not able to utilize its capacities fully.
- xv. Even though the sales of the domestic industry increased over the injury period, (a) the domestic industry had to reduce prices by about whopping 37% over the period, (b) the domestic industry was faced with significant unutilised capacities. The domestic industry was forced to reduce its prices drastically in order to retain its customers and market share thereby suffering huge financial losses.
- xvi. Market share of the domestic industry declined in 2014-15, and increased thereafter till the Period of investigation. Still the domestic industry is facing unutilised capacities.
- xvii. Domestic industry is exporting to more than 30 countries globally in developed and developing countries, but holding minority share in its own home market as against imports holding the majority of the share.
- xviii. Profit per unit, total profit, profit before interest and cash profit have all declined throughout the injury period and have become negative in the Period of investigation. The return on investment has declined over the injury period and became negative in the Period of investigation. The domestic industry is faced with cash losses in the POI. Growth of the domestic industry in terms of profit, cash profit and ROI has been very negative.
- xix. Applicant's export price increased by **%, domestic selling price declined by **% due to dumping in the Country.
- xx. While applicant has significant exports and the same are profitable, the applicant is facing significant financial losses in its home market.

Examination by Authority

Cumulative Assessment

- 16. In the present case, the margin of dumping from each of the subject countries have been found to be more than the de minimis limit prescribed; the volume of dumped imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed; and the exports from the subject countries directly compete inter se and with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market. In terms of Annexure II (iii) of the AD Rules, the Cumulative assessment of the effects of the dumped imports is appropriate in the light of the conditions of competition between the imported products and the conditions of competition between the imported products and the like domestic product. The Authority, therefore, considers it appropriate to cumulatively assess the effect of dumped imports from the subject countries.

Examination on Injury

- 17. The Authority has taken note of various submissions made by interested parties on injury to the domestic industry and has analyzed the same considering the facts available on record and applicable

laws. The injury analysis made by the Authority hereunder ipso facto addresses the various submissions made by the interested parties.

I. Assessment of Demand

18. The Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product concerned in India as the sum of domestic sales of the applicant and imports from all sources. Exports made by the applicant have been excluded from the computation in order to ascertain apparent consumption. The demand so assessed is given in the table below:

SN	Particulars	Units	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	Sales of Domestic Industry	MT	***	***	***	***
2	Sales of Other Indian Producers	MT	-	-	-	-
3	Subject Countries	MT	236	301	425	445
4	Other	MT	29	52	48	30
5	Total Demand	MT	422	522	715	768

**The POI figures are annualised*

19. It is seen that the demand for the product under consideration has increased throughout the injury period.

II. Volume Effects of Dumped Imports

i. Import volumes and market share in Imports

20. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the transaction wise import data procured from DGCIS.

SN	Particulars	Units	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	Subject Countries	MT	235	301	425	445
1a	China	MT	88	44	53	110
1b	Hong Kong	MT	-	-	-	114
1c	Korea	MT	144	255	372	146
1d	Taiwan	MT	3	2	-	75
2	Others	MT	29	52	48	30
3	Total imports	MT	264	353	473	475
4	Subject countries imports in relation to					
4a	Indian Production	%	14	17	24	25
4b	Demand	%	56	58	59	58
4c	Total Import	%	89	85	90	94

**The POI figures are annualised*

21. It is seen that:

- Imports from the subject countries as a whole have increased in absolute terms throughout the injury period.
- Import from China has decreased during 2014-15 and thereafter increased during the POI as compared to the base year as well as the previous years.
- Import from Hong Kong was Nil during the injury period and thereafter started importing during the POI.
- Import from Korea has increased during the entire injury period and thereafter decreased during the POI to a level same as the base year.
- Import from Taiwan was insignificant during the entire injury period and thereafter increased during the POI.
- Imports from subject countries in relation to production have increased over the entire injury period and POI.
- The imports from subject countries in relation to demand has remained consistent over the entire injury period and the POI.
- The imports from subject countries in relation to total imports has remained almost consistent over the entire injury period and the POI.

III. Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

22. In terms of Annexure II (ii) of the Rules, the Designated Authority is required to consider the effect of the dumped imports on domestic prices in terms of price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

i. Price Undercutting

23. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed value of imports with net sales realization of the domestic industry. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex-factory level. The domestic prices and margin of undercutting is shown as per the table below:

SN	Particulars	Unit	China	Hong Kong	Korea	Taiwan
1	Landed price of imports	Rs./KG	167	68	85	83
2	Net Sales Realisation	Rs./KG	***	***	***	***
3	Price undercutting	Rs./KG	***	***	***	***
3a	Price undercutting	%	***	***	***	***
3b	Price undercutting	Range	495-505	1360 -1370	1070 -1080	1095 -1105

24. It is seen that the landed price of imports from each of the subject countries is significantly lower than the Net sales realization of the Domestic Industry, resulting into significant and positive price undercutting.

ii. Price Underselling

25. Authority considers that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been determined considering the cost of production of the Domestic Industry for the product under consideration during the POI, in accordance with Annexure III of the Anti-dumping Rules.

SN	Particular	UOM	China	Hong Kong	Korea	Taiwan
1	Import Volume	MT	138	142	183	93
2	Non Injurious Price	Rs/KG	***	***	***	***
3	Landed Price	Rs/KG	***	***	***	***
4	Price Underselling	Rs/KG	***	***	***	***
4a	Price Underselling	%	***	***	***	***
4b	Price Underselling	Range	625-635	1690-1700	1330-1340	1365-1375

**The POI figures are annualised*

26. It is seen that the landed price of the subject goods from each of the subject countries is significantly lower than the NIP determined for the Domestic Industry resulting into significant and positive price underselling effects.

iii. Price Suppression/Depression

27. In order to determine whether the effect of imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred, the Authority examined the changes in the costs and prices over the injury period as below:

SN	Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	Landed price of imports	Rs./KG	373	255	154	101
2	Cost of sales	Rs/KG	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	96	89	97
3	Selling price	Rs/KG	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	85	69	63

**The POI figures are annualised*

28. It is seen that the cost of sales of the domestic industry is almost consistent throughout the injury period and the POI. The selling price of the domestic industry has decreased during the entire injury period and the POI. The selling price is above the cost of sales during 2013-14 and 2014-15 but thereafter became lower than the cost of sales during 2015-16 and the POI. Further, the landed value of imports from the subject countries has declined throughout the injury period and the POI and is significantly

lower than the cost of sales of the domestic industry. It is thus seen that the prices of the dumped imports are depressing and suppressing the prices of the domestic industry.

IV. Economic parameters of the Domestic Industry

29. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the Domestic Industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. The various injury parameters relating to the Domestic Industry are discussed below

i. Production, Capacity, Capacity Utilization, & Sale Volumes

30. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization is as follows:

SN	Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	Capacity (Total)	MT	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	100	100	100
2	Production	MT	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	106	103	103
3	Capacity Utilization	%	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	106	103	103
4	Domestic Sales	MT	***	***	***	***
4a	Trend	Indexed	100	108	154	187
5	Export Sales	MT	***	***	***	***
5a	Trend	Indexed	100	102	97	122

**The POI figures are annualised*

31. The Authority has taken the capacity of the Domestic industry from the cost audit report. It is seen that the capacity has remained constant throughout the injury period and the POI. Production and capacity utilisation with the domestic industry has remained consistent throughout the injury period and the POI with slight increase during 2014-15. Domestic Sales has improved marginally over the entire injury period and the POI whereas export sales has improved significantly. It is stated by the petitioner that they hold sufficient capacity to meet the current demand for the product under consideration and imports could not have occurred or increased for that reason.

ii. Market share in Demand

32. The effects of the dumped imports on the market share in demand of the domestic industry have been examined as below:

SN	Market Share in Demand	Units	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	Sales of Domestic Industry	%	***	***	***	***
2	Imports from Subject Countries	%	56	58	59	58
3	Others	%	7	10	7	4
4	Total Demand	%	100	100	100	100

**The POI figures are annualised*

33. It is seen that the share of sales of Domestic Industry and share of imports in total demand has almost remained consistent throughout the injury period and the POI. The share of imports from other countries is insignificant throughout the entire injury period and the POI.

iii. Inventories

34. The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
Average	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	132	163	155

**The POI figures are annualised*

35. It is seen that the inventories with the domestic industry have increased over the entire injury period and POI, however, in absence of information regarding permissible average inventory stocks to be maintained by the industry for the subject goods, the present numbers cannot be a substantive indicator of the present investigation

iv. Profit/Loss, Return of Investment PBIT & Cash Profit

36. The profit/loss, cash profits, profit before interest and return on investment of the domestic industry is as follows:

SN	Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	(***)	(***)
1a	Trend	Indexed	100	46	(3)	(61)
2	Profit/Loss	Rs.Lacs	***	***	(***)	(***)
2a	Trend	Indexed	100	49	(5)	(113)
3	Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	(***)
3a	Trend	Indexed	100	51	4	(94)
4	Profit before Interest	Rs.Lacs	***	***	***	(***)
4a	Trend	Indexed	100	50	0	(103)
5	Return on Capital Employed-NFA	%	***	***	***	(***)
5a	Trend	Indexed	100	64	0	(116)

**The POI figures are annualised*

37. It is seen that the Profit per unit, total profit, PBIT, cash profit and ROCE have declined throughout the injury period and have become negative in the POI.

v. Employment and wages

38. The employment and wages are below:

SN	Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI*
1	No of Employees	Nos	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	119	123	114
2	Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	127	150	161
3	Wages per Unit	Rs/MT	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	119	147	156

**The POI figures are annualised*

39. It is seen that the number of employees during the POI are at the same level as that of the base year though it had increased during 2014-15 and 2015-16. The wages and wages per unit increased throughout the injury period and the POI which could be a normal response to the economy.

vi. Magnitude of Dumping

40. It is seen that the imports from the subject countries are far above the de minimis level of dumping margin. The dumping margin for subject countries is quite significant.

vii. Ability to raise capital investment

41. It is stated by the petitioners that they are suffering significant financial losses during the period of investigation. While the petitioner is a multi-product company, long term losses could impact its ability to raise capital, however, there is no direct evidence for the same.

viii. Factors Affecting Domestic Prices

42. It is stated by the petitioners that imports are at a price materially below the cost of production and NIP of the domestic industry, since the only competition to the domestic industry is import it is the import price that is solely responsible for the steep decline in the selling prices and consequent financial & cash losses being suffered by the domestic industry.

ix. Overall assessment of Injury

43. It is seen that the imports from the subject countries have increased throughout the injury period in absolute terms. The share of imports in relation to production and consumption has remained consistent throughout the injury period and the POI. The landed price of imports from the subject countries has declined throughout the injury period and the POI. Dumping margin from the each of the subject countries is positive. Subject imports are positively undercutting and underselling the domestic prices

and causing suppressing and depressing effect on the domestic prices. The performance of the domestic industry has deteriorated in terms of profits, PBIT, cash profits and ROCE.

44. The Authority also noted that the difference in prices of imported goods and domestic goods is very large pointing to the fact that these possibly are not the same goods. It also gets supported from the facts mentioned by domestic industry in writing, as mentioned in above paragraphs, and during the interactions that imports are of “off grade goods” called “stock lots”. Therefore, it is incorrect to compare the prices of prime goods of the domestic industry with the “off grade goods” being imported.
45. The Authority also noted that product under consideration is fetching significantly higher prices in exports market in comparison to that of domestic markets. Further, Product under consideration is in profits when both domestic and export sales are considered in total.

V. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

46. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry, as computed by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules, has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin during the POI and the injury margin so worked out is as under:

SN	Particular	UOM	China	Hong Kong	Korea	Taiwan
1	Import Volume	MT	138	142	183	93
2	Non Injurious Price	Rs/KG	***	***	***	***
3	Landed Price	Rs/KG	***	***	***	***
4	Injury margin	Rs/KG	***	***	***	***
5	Injury margin	%	***	***	***	***
5a	Injury margin	Range	625-635	1690-1700	1330-1340	1365-1375

F. OTHER KNOWN FACTORS & CAUSAL LINK

47. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Rules and Agreement on Anti-dumping, the Authority proceeded to see whether any factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry.

i. Imports from Third Country

48. The imports from countries other than subject countries are not significant in volume terms so as to cause or threaten to cause injury to the domestic industry. About 94% of total imports during the POI are from subject countries. The share of subject countries has remained almost consistent during the entire injury period.

ii. Contraction in demand

49. The demand for the subject goods has shown an increasing trend in absolute terms. Accordingly, fall in demand cannot be the reason for injury to the domestic industry. The share of DI during the entire injury period has remained consistent.

iii. Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

50. The Authority notes that there is no trade restrictive practice which could have impacted the DI.

iv. Developments in technology

51. The technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, developments in technology had no impact on the growth of the DI.

v. Changes in pattern of consumption

52. The DI is producing the type of goods that have been imported into India. Possible changes in pattern of consumption are not a factor that could have caused any impact on the DI.

vi. Export performance

53. The exports by the DI are significant during the entire period and have not caused any injury to the DI. The domestic sales has been identified and examined for the present analysis.

vii. Performance of the domestic industry with respect to other products

54. The Authority notes that the performance of other products being produced and sold by the DI has not impacted the DI as the information with respect to the product under consideration only has been considered for analysis.

viii. Productivity of the domestic industry

55. The Authority notes that the production and productivity of DI seen an increasing trend.

G. POST DISCLOSURE COMMENTS

56. The post disclosure submissions have been summarized and addressed as below:

Views of the Domestic industry

57. The Domestic Industry made the following submissions:
- i. Price is one of the factors and not the sole reason while deciding whether the domestic product is like article to the PUC. Factors such as product characteristics, production technology, manufacturing process, plant & equipment, raw material used in the production, functions & usage, producer's and consumer's perception, channel of distribution, customs classification and national & international standards concerning the PUC are the facts which have been considered by the Authority in past to determine whether the goods supplied by the DI is a like article to the imported PUC. The DI has given information with regard all the parameters above mentioned and has claimed that the domestic product is like article to the PUC.
 - ii. The imported product transactions pertain to the PUC and the DI has produced and sold like article to the imported PUC. The two products are commercially and technically substitutable. The segregation of PUC and NPUC is sourced from DGCI&S and the data clearly shows the description of the product.
 - iii. The Authority is not sure of the fact that the domestic goods are like article of the PUC. The language used is "possibly" which makes it clear that the Authority needs more information to reach to the conclusion that the domestic goods are like article.
 - iv. The Authority has not considered the fact that the imports of Sun/Dust Control Polyester Film from Chinese Taipei and UAE were subject to AD measure in the past and the scope of PUC in the present investigation is same as the previous investigation.
 - v. PCN wise analysis could not be undertaken in the present investigation due to the fact that none of the exporters have responded for conducting fair comparison and the product types cannot be identified from the description of the import listing. The DI should not be penalized because of non-cooperation of importers or exporters from subject countries.
 - vi. The DI has already segregated the PUC into 1, 2 and 3 ply product.
 - vii. Stock lot cannot be separated from the scope of PUC. Even if it is assumed that the DI was not producing stock lot, the same could not have been excluded from the scope of PUC. This is because the inclusion of a product type within the scope of PUC does not depend upon whether the DI is making exactly the same type, of the same quality and having the same characteristics. Instead, the DI is only required to produce like article to the PUC, wherein like article is defined under Rule 2(d) of the Act. Even if the Authority comes to the conclusion that the DI is not producing stock lot, the second question which arises is that whether the product produced by the DI has characteristics closely resembling those of the imported product, which has not been dealt.
 - viii. The past practice of the Authority, which has also been upheld by the Tribunal makes it clear that a product cannot be excluded merely on the basis that it is of a lower quality.
 - ix. The DI was faced with significant unutilized capacities and was forced to reduce its prices drastically in order to retain its customers and market share thereby suffering huge financial losses. There exists a strong nexus between the increase in dumped imports of the subject goods and the material injury being suffered by the domestic industry.
 - x. Facts were inappropriately considered based on presumptions and assumptions. There is an implication of introduction of a requirement/obligation which does not exist under the law and in fact is contradictory to the requirement of the law, such as:
 - a. the difference is so wide that it makes comparison of imported goods with domestic goods unrealistic

- b. absence of information regarding permissible average inventory stocks to be maintained by the industry for the subject goods
- xi. Despite finding it appropriate to conduct cumulative assessment, the Authority has analyzed individual country trends.
- xii. The DI has neither claimed injury nor was asked to provide any evidence on account of petitioner being a multiproduct company and the impact of long term losses on its ability to raise capital.
- xiii. While the DI agrees on higher prices in export market, which clearly shows dumping and consequent impact on the domestic industry in India, consideration of total profits in domestic and exports is an approach directly contradictory to the approach consistently applied by the Authority
- xiv. AD duty may be imposed as a fixed form expressed in US\$/kg.

Views of the opposing interested parties

58. The submissions of various opposing interested parties are summarized as follows:

- i. The DGCI&S data, EXIM Data Bank maintained by Ministry of Commerce in India and Hong Kong customs do not correlate. C&SD statistics do not provide a specific breakdown into HS 3920 69 29, thus the comparison could only be made at the 6 digit level i.e. HS 392069, which means C&SD figure for HS 392069 includes products beyond the scope of the current AD investigation.
- ii. The AD investigation was initiated based on fallacious dumping allegations made by the DI and without sufficient evidence of either dumping or injury of the subject goods from subject countries.
- iii. The import data have included the imports which are not the PUC or the PUC consists of the product types having greatly different unit prices.
- iv. An observed decline in the average unit prices may actually be the result of a change in the product mix, e.g. due to an increased proportion of the lower priced domestic products being sold in a particular year, rather than due to a genuine change in domestic prices as a result of dumping.
- v. Department of the HKSAR shows that the HongKong did not have any exports of the subject goods to India during the injury period and the POI.
- vi. HongKong did not cause any injury to the DI as it only accounts for 2% of the India's total import during the POI. The import of PUC started during POI, thus any factor showing injury prior to the POI should not be linked to imports from HongKong. The two HongKong companies were wrongly cited in the petition as known exporters as one had only sent the PUC as samples or testing rather than for commercial purpose and the other company has not exported any subject products into India.
- vii. The petitioner has included all imports coming under the heads of "sunfilm", "window film" and "dust control film" as imports of PUC irrespective of the HS Codes, such reclassification based on commercial product descriptions is prone to errors and may have led to the import figures being overstated.
- viii. There is no causal link between the alleged dumping of the PUC from the subject countries and the alleged injury suffered by the DI. The alleged injury caused to the DI is quite evidently on account of their own inefficiencies. Information concerning the economic parameters of the DI shows that the economic health of the DI has improved, therefore, it can be safely inferred that the DI is not suffering any losses on account of alleged dumping of PUC. The negative ROCE is false as the DI market share and production have shown no decline.

Examination by the Authority

59. It is noted that the issues raised at post disclosure stage have already been examined by the Authority in above relevant paragraphs.

- i. The analysis has been done cumulatively and additionally individually also.

- ii. This is a fresh investigation therefore the PUC adopted in a previous investigation and findings issued there cannot be the guiding principle for present original investigation as the issue of PUC has been examined and discussed here afresh.
- iii. The PUC is very wide covering various product types and therefore reasonable comparison between like articles manufactured by DI and being imported is not possible. Even if there was no response from exporters, the DI could have helped the Authority in fine tuning the PUC into various PCN in view of their long experience in the subject goods.
- iv. The concept of 'stock lot' and that being the reason for low import prices was explained by the domestic industry themselves through their technical team during discussions. The goods which are rejects or seconds are not the like article to the prime goods and hence comparison of two is most unfair.
- v. The Authority has relied upon DGCI&S data, since there was no exporter response during the investigation, the specific data could not be cross verified.

H. CONCLUSIONS

60. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts available, as recorded in this finding, the Authority concludes that:
- i. The imports of the subject goods from subject countries and the goods produced by the DI are not like articles.
 - ii. There is overall improvement in the health of the DI. The DI is not suffering from injury.

I. RECOMMENDATION

61. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all the interested parties and adequate opportunity was given to the domestic producers, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the present investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules it is established that the domestic industry is not suffering injury on account of the subject imports from the subject countries as there is a vast difference in the goods produced by the DI and that imported from the subject countries. The Authority is of the view that imposition of antidumping duty is not warranted in the present investigation. In view thereof the Designated Authority considers it appropriate to not recommend Anti-Dumping Duty in respect of Sun/dust control film originating in or exported from China, Chinese Taipei, Hong Kong and Korea.
62. An appeal against the orders of the Central Government arising out of this finding shall lie before the Customs, Excise, and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 and the decision of Hon'ble High Court of Delhi in M/s Jindal Poly Film Ltd. v. Designated Authority W.P. (Civil) No. 8202/2017.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Director General